

औरंगजेब के रास्ते पर चलने वालों को मेरा बुलडोजर दफन कर देगा: योगी

● सीएम योगी ने हाईटरपुर में चुनावी जनसभा को किया संबोधित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ हमीरपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काग्रस को नियमों पर लेते हुए कहा कि इनके अंदर औरंगजेब की ओर आमा धुस गई है। इनका घोषणापत्र मुस्लिम लोगों का दस्तावेज है। ये देश में शिया कानून थोपना चाहते हैं और तालिबानी व्यवस्था लाए करना चाहते हैं। अगर ऐसा हुआ तो बैठकों स्कूल नहीं जा पायेंगे और महिलाओं को बुक्स पहलवान भरों में केंद्र रहना पड़ेगा। ये देश पर विषयत टैक्स के नामपर जजिया कर लगाना चाहते हैं। योगी ने कहा कि औरंगजेब के गार्से पर चलने वालों को मेरा बुलडोजर हमेशा के लिए दफन कर देगा। उन्होंने कहा कि ये देश बाबा साहब के संबोधन से चलेंगे न कि शिया कानून से। उन्होंने कहा कि जबसे राममंदिर का विषय है, और माता नैना देवी की चिंतपुरी और माता नैना देवी की युण्डूधूधि को कोटि किंतु नन्मन करते हुए कहा कि दिमाचल प्रदेश देवों और बौद्धों की भूमि है। योगी आदित्यनाथ खुशराम को बिहारी में हाईटरपुर लोकसभा सीट के लिए पार्टी प्रत्याशी अनुराग राहुल और बड़सर विधानसभा के लिए हो रहे उपचुनाव में बीजेपी प्रत्याशी इंद्रदत्त



लखनऊपर के पक्ष में चुनावी जनसभा

सीट पी शामिल है। जनता कह रही है कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। योगी ने कहा कि अयोध्या और काशी का कार्य संपन्न हो चुका है, अब हम मथुरा की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।

योगी ने कहा कि आज 500 साल का इंतजार समाप्त हुआ है। अयोध्या में रामलला विजयमान हुए हैं। जो पूरी दुनिया प्रकृति थी, हर सनातनधर्मों की असंभव था तब काग्रेस में शोक की लहर थी। काग्रेस ने अयोध्या का अमरनंग तुक्रा दिया था। आज भी उनके बुद्धिमत्ता का हहते हैं कि अयोध्या

में राममंदिर का निर्माण नहीं होना चाहिए था, इनके सद्योगी राममंदिर को बेकार बताते हैं। योगी ने कहा कि आज हम मोदी के नेतृत्व में भारत का सद्य देख रहे हैं। दुनिया में भारत का सम्पादन बढ़ रहा है। आतंकवाद और नक्सलबाद समाप्त हो गया है। अब तेज आजाग में पटाखा भी फट जाए तो पाकिस्तान सफाई देने लगता है। विकास को समर्पित बड़े बड़े कार्य हुए हैं। इन्स्टरेक्टर डेलीपर्स्ट यांगों की असंभव था तब काग्रेस में शोक की लहर थी। काग्रेस ने अयोध्या का अमरनंग तुक्रा दिया था। आज भी उनके बुद्धिमत्ता का हहते हैं कि अयोध्या

पंजाब के युवाओं को इंग माफिया की चपेट में देखकर रोता है गेया हृदय: योगी

● यूपी के सीएम ने लुधियाना में किया वादा, भाजपा सदाकार बनाने पर पंगल को 48 घंटे ने नाफिया मुक्त करेंगे

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ लुधियाना



पहला राजनीतिक दल है, जिसके एक दर्जन नेता भ्रष्टाचार के मामले खिलाफ चार्जरी दाखिल हुई है।

यह आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़ी हुई थी, लेकिन इसके

में ही आज जेल-बेटे पर हैं। यह पंजाब की भावना के साथ खिलाफ लड़ते हुए गई है। यह देश के

लुधियाना में रोकी गई थी। यह देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा रुक्मिणी देखकर दुख होता है।

पंजाब की योगी ने कहा कि आज भी आप इसे लेकिन राम मंदिर, देश के लिए एक बड़ा

ઇજારાઇલ-ફિલિરતીન યુદ્ધ

ગંભીર સંકટ

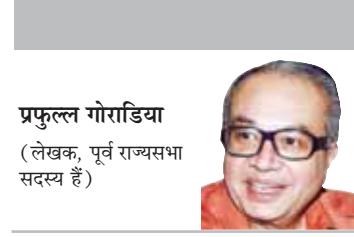
इज्जराइल-फिलिस्तीन युद्ध बहुत लंबा रिंचता जा रहा है जिसके भयानक मानवीय रूप से त्रासद परिणाम सापेने आए हैं। उर्दू में 'राफ़ा' का अर्थ बेहतरी या समृद्धि है, पर इस शहर में बच्चों समेत कम से कम 45 लोगों की मौत हुई। ये एक शरणार्थी शिविर में थे जो गाजा में इज्जराइली हवाई हमले का शिकार बन गया। स्वाभाविक रूप से इस कृत्य की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निन्दा हुई तथा इज्जराइल फिलिस्तीन से युद्ध के मामले पर और अलग-थलग पड़ गया। कुछ ही दिन पहले अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने 'यहूदी राष्ट्र' को राफ़ा में कार्रवाई बंद करने का आदेश दिया था। हालांकि, संयुक्त राष्ट्रसंघ की सर्वोच्च अदालत ने पिछले सप्ताह ही इज्जराइली बलों को कार्रवाई बंद करने का आदेश दिया था, लेकिन उनके सीमावर्ती शहर पर हमले जारी रहे जो लंबे समय से देश में अंतिम शरणस्थली बना हुआ है। इस बीच इज्जराइली हमलों के कारण फिलिस्तीनियों के प्रति बढ़ती एक जुटाता का नतीजा 'आल आईज़ आन राफ़ा' नारे पर केन्द्रित हैं जो सोशल मीडिया में बहुत लोकप्रिय हो गया है। यह गाजा शहर में लगातार जारी नरसंहार की ओर संकेत करता है और बहुत से लोगों ने हैशटैग आल आईज़ आन राफ़ा पर शोक संदेश भेजे हैं। इस नारे के प्रयोग से वर्तमान युद्ध के प्रति जागरूकता पैदा करने में सहायता मिली है। इस महीने के प्रारम्भ में सीमा पार गाजा में इज्जराइल द्वारा सैनिक कार्रवाई तेज़ करने तथा क्रासिंग पर कब्जे के पहले राफ़ा गाजा में मानवीय सहायता भेजने का प्रमुख बंदरगाह था। राफ़ा में लडाई के कारण एक मिलियन से अधिक फिलिस्तीनी विस्थापित हुए हैं। इनमें से बहुसंख्य पहले ही इज्जराइल और हमास के बीच संघर्ष के कारण विस्थापित हो चुके हैं। इस बीच व्हाइट हाउस के अनसार, संभवतः अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन



इज्जराइल के प्रति अपना दृष्टिकोण नहीं बदल रहे हैं क्योंकि इस घटना ने अभी वह 'लाल रेखा पार नहीं की है' जिससे अमेरिकी समर्थन में परिवर्तन पर विचार किया जा सके।

ऐसा इस तथ्य के बावजूद है कि पिछले साल 7 अक्टूबर को युद्ध शुरू होने के बाद पहली बार इजराइली टैंक मध्य राफा में पहुंचे हैं। इजराइल को वैश्विक स्तर पर एक और धक्का लगा है जो संभवतः गाजा पट्टी में रक्तपात समाप्त करने का व्यापक संकेत है। हालांकि, किसी को केवल हमास आतंकियों के मारे जाने पर चिन्ता नहीं थी, पर अब स्पेन, नार्वे और आयरलैंड ने फिलिस्तीन की स्वतंत्रता को मान्यता दे दी है। इन तीन देशों ने किसी राज्य का अस्तित्व स्वीकार करने के बजाय केवल उसकी संभावना स्वीकारी है। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप फिलिस्तीनी अथरिटी तथा तीन देशों के बीच निकट राजनीयक संबंध स्थापित हो जाएंगे। सब ने घोषणा की है कि वे फिलिस्तीन को 1967-पूर्व की सीमाओं के आधार पर स्वीकार करते हैं जिसकी राजधानी पूर्वी येरूशलेम है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 193 सदस्यों में से 143 ने फिलिस्तीन को मान्यता दे दी है। नवीनतम स्वीकृति इस बात का प्रमाण है कि इस अवधारणा का आर्थिक व राजनीयक रूप से शक्तिशाली पश्चिमी देशों में समर्थन शायद बढ़ रहा है। इजराइल ने पहले ही पश्चिमी किनारे पर कब्जा कर लिया है तथा गाजा पट्टी उसके घेरे में है। इजराइल वहाँ एक युद्ध लड़ रहा है जिसमें 36,000 से अधिक लोग मारे गए हैं। ऐसे में ऐतिहासिक रूप से प्राचीन फिलिस्तीन का कुछ बचा नहीं है। हालांकि, इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतनयाहू को इस बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्होंने राफा में मौतों को एक 'त्रासद भूल' कहा है।

पश्चिम बंगाल में आजकल आध्यात्मिक संस्थान तृणमूल कांग्रेस के निशाने पर हैं। रामकृष्ण मिशन पर हमलों ने राज्य के राजनीतिक परिदृश्य और उसके धार्मिक सद्व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों पर चिन्ता पैदा कर दी है।



प्रफुल्ल गोराडिया
(लेखक, पूर्व राज्यसभा
सदस्य हैं)

प शिंचम बंगाल में आजकल आध्यात्मिक संस्थान तृणमूल कंग्रेस के निशाने पर हैं। रामकृष्ण मिशन पर हमलों ने राज्य के राजनीतिक परिदृश्य और उसके धार्मिक सद्व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों पर चिन्ता पैदा कर दी है। पश्चिम बंगाल आजकल फिर गलत खबरों के कारण सुखियों में है। जलपाईगुड़ी में सम्मानित रामकृष्ण मिशन के परिसरों पर हमले हुए और राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कंग्रेस-टीएससी के गुंडों ने वहाँ तोड़फोड़ की। दुःख की बात है कि यह पश्चिम बंगाल में धार्मिक या आध्यात्मिक केन्द्रों पर हुआ एकमात्र हमला नहीं है। राज्य में 'इस्कान' मंदिर परिसरों पर भी टीएससी के गुंडों ने हमले किए हैं। इसका कारण राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा संगठन के भिक्षुओं पर यह संदेह प्रकट करना है कि वे भाजपा के हमर्दद हैं। धार्मिक व आध्यात्मिक संस्थानों पर हमले के इसी क्रम में भारत सेवाश्रम संघ-बीएसएस के मुरिंदाबाद जिले में स्थित बेलडांगा परिसर पर हमला हुआ और उसे सत्तारूढ़ पार्टी के आक्रामक तत्वों का शिकार होना पड़ा। भारत सेवा समिति-बीएसएस के भिक्षु कर्तिक महाराज पर ममता बनर्जी ने यह आरोप लगा कर अपना गुस्सा उतारा गी कि वे मतदाताओं को भाजपा के पक्ष में प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं। ममता बनर्जी का विश्वास है कि इस्कान भी ऐसी ही भूमिका निभा रहा है। इस परिघटना ने राज्य में अनावश्यक एवं अतार्किक रूप से सम्मानित धार्मिक व आध्यात्मिक संस्थानों की छवि खराब करने का प्रयास किया है जिसका प्रभाव राज्य में धार्मिक सद्व्यवहार पर पड़ सकता है।



थे। स्वामी विवेकानन्द वास्तव में आधुनिक हिंदूवाद के वैश्विक प्रतीक थे जिन्होंने सनातन धर्म का ध्वज पश्चिमी देशों में फहरा दिया था। स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो में 1893 में आयोजित विश्व धर्म संसद में अपने ओजस्वी भाषण से अपनी वैश्विक आधात्मिक विजय का श्रीगणेश किया था। हालांकि, 'इंटरनेशनल सोसाइटी फार कृष्णा कांशासनेस' - इस्कान की स्थापना न्यूयार्क में हुई थी, पर उसके संस्थापक भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद य श्रीला प्रभुपाद का जन्म कोलकाता में हुआ था। वे 69 वर्ष की आयु में अमेरिका गए थे। उनका उद्देश्य अमेरिका समेत सारी दुनिया में भगवान कृष्ण का संदेश फैलाना था। रामकृष्ण मिशन व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित इस्कान जैसे सम्मानित संस्थानों पर हमला कर उनमें तोड़फोड़ करने के बारे में सोचा नहीं जा सकता और यह कृत्य अक्षम्य अपराध है।

उल्लेखनीय है कि इस्कान के दुनिया भर में 160 से अधिक मंदिर हैं और इनकी स्थापना उन देशों के नागरिकों ने की है जिनमें हिंदू, प्रमुख हैं। पश्चिम बंगाल में इन सम्मानित धार्मिक व आध्यात्मिक केन्द्रों पर हुए हमलों के बारे में संदेह है कि शायद इनको उकसाने वाले हिंदू धर्म के बजाय अन्य धर्मों के अनुयाई हैं। इस प्रकार विश्वधर्मियों द्वारा

हिंदू मंदिरों व आध्यात्मिक स्थलों पर
भगवान् मल से यह संदेश जाता है कि हालिया
टनायें हिंदुओं के खिलाफ गुंडागर्दी हैं।
इस प्रकार हिंदुओं और उनके धर्मस्थलों
पर भारत में होने वाले हमले धार्मिक रूप
में आत्माती सिद्ध हो सकते हैं। सत्तारूढ़
ल द्वारा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इनको
कसाना धार्मिक सद्ब्राव के लिए भी
प्रतरनाक है। ये हमले दो कारणों से
आसकर दुर्भाग्यपूर्ण हैं। रामकृष्ण मिशन
वश्वविख्यात संस्था है क्योंकि स्वामी
वेचेकानंद ने अपने दम पर दुनिया को
हिंदूवाद की शिक्षा दी थी। इस्कान ने
अपनेक देशों में हिंदू मंदिरों की स्थापना को
भव बनाया है। अपने शानदार मंदिरों के
आध्यम से यह संगठन 'हरे रामा, हरे
राष्ट्रा' की पूजा तथा हिंदू जीवनशैली का
चार कर रहा है।

यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि
तात्त्विकों तक दमन के बाद कुछ ही
लालों से हिंदू भारत की छवि चमकने
गई है। लेकिन अब हमारे सामने पश्चिम
गाल के सभी स्थानों से अपने मंदिरों
और आश्रमों पर गुंडों और अपराधियों
पर हमलों की घटनायें सामने आ रही
हैं। केवल लगभग एक शताब्दी पहले
प्रिंसेस नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने कहा
था, 'बंगाल आज जो सोचता है, भारत
ल सोचेगा।' इससे स्पष्ट होता है कि
गाल प्रांत की भूमिका नेतृत्वकारी थी।

वर्तमान घटनाओं से यह सवाल उठता है कि क्या बंगल के नेताओं को ऐसे काम करने चाहिए जिनका उद्देश्य चार या पांच निवाचन क्षेत्रों में सीटें जीतना हो ? वर्तमान प्रकरणों को देखते हुए हमें 'रिनॉस' या 'पुनर्जागरण' काल को देखना चाहिए जिसका नेतृत्व समग्र रूप से बंगाल ने किया था । लेकिन इसके साथ ही हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि चैतन्य महाप्रभु ने क्र्या किया था जिनको बहुत से लोग भगवान कृष्ण का अवतार मानते हैं । चैतन्य महाप्रभु ने बंगाल के कम से कम एक हिस्से को 'भारत' के लिए सुरक्षित रखा था । यदि ऐसा न होता तो इस पूरे प्रांत पर पाकिस्तान का कब्जा हो जाता और यह बरबाद हो जाता । उन्होंने गरीब बंगालियों के इस्लाम में धर्मातरण का विवेरोध कर उनको बचाया और आज भी वे भगवान कृष्ण की पूजा करते हैं । रामकृष्ण परमहंस भी बंगाल को ईश्वरीय उपहार की तरह थे और वे स्वयं ईश्वरीय प्रतिभा की झलक देते थे । देश को बंगाल के योगदान के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है । आधुनिक भारत के महान तम कवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर भी देश और दुनिया को बंगाल का उपहार थे । उनके द्वारा रचित गीत आज हमारा राष्ट्रगीत है ।

इसी प्रकार हम बंकिम चंद्र वहूपाद्याय और उनके आत्मा को झंकृत

अभिव्यक्त करना पड़ा था कि उनके लोग 'निरर्थकता का सबसे अच्छा पुलिंदा' हैं । हालांकि, यह टिप्पणी पूरी तरह गलत नहीं थी, परं बंगला में पले-बढ़े व अच्छी बांगला बोलने वाले इस लेखक का विचार है कि उनको ज्यादा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए था । वैसे तो बंगाली होने का अर्थ पूर्णितः स्पष्ट है, परं एक समान भाषा द्वारा पैदा एकता धार्मिक दबाव का सामना करने में सफल नहीं हो सकती है । दुनिया के अनेक हिस्सों से यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अनुभव हमारे सामने आता है । दुःख की बात है कि उनीसर्वों शताब्दी में भारत को पुनर्जागरण लाने वाली स्थिति एक त्रासद कथा में बदल गई । लेकिन इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि बंगाल हमेशा 'राष्ट्रवाद' के पक्ष में रहा है । जब भी ऐसा लगा कि प्रांत के रूप में पश्चिम बंगाल पीछे जा रहा है, राष्ट्रवाद की भावना ने उसे फिर से उभारने तथा आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है । वर्तमान राजनीतिक स्थितियों में जहां चुनावी लाभ सत्तारूढ़ दल के कुछ लोगों को महान धार्मिक व आध्यात्मिक स्थलों पर हमले के लिए उकसाता है, राष्ट्रवाद एक बार फिर हमारे सामने प्रकाश रेखा की तरह है । उम्मीद है कि हमेशा की तरह बंगाल फिर वर्तमान अंधकारमय स्थितियों से बाहर निकलने में सफल होगा ।

नवाचार और बुद्धिमत्ता पर एआई का प्रभाव

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम है जो किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए पूरी तरह से पहले से दिए गए कंप्यूटर डेटा पर निर्भर करता है।



एम जे वारसी (लेखक, एक प्रोफेसर ३५)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक एक्स-नोवो कंप्यूटर तकनीक है जो अनिवार्य रूप से मानव व्यवहार की नकल करने में सक्षम मशीनों को विकसित करने से संबंधित है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका एआई को एक कंप्यूटर या रोबोट की क्षमता के रूप में परिभाषित करती है जो आमतौर पर बुद्धिमान प्रणियों से जुड़े कार्यों जैसे धारणा, आलोचनात्मक सोच और निर्णय लेने को निपादित करती है। जहां तक मानव मस्तिष्क का संबंध है, सबसे पहले, यह सूचना को संसाधित करता है, विभिन्न कोणों से संसाधित सूचना का विश्लेषण करता है और अंत में एक तार्किक निष्कर्ष पर पहुंचता है। इसके विपरीत, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक

99

सॉफ्टवेयर प्रोग्राम है जो किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए पूरी तरह से फलेसे दिए गए कंप्यूटर डेटा पर निर्भर करता है। पूरी प्रक्रिया में, कंप्यूटर सिस्टम मानव मस्तिष्क की तरह व्यवहार करता है। एआई आज के समय की मांग है और निश्चित रूप से, संचार, रक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कृषि में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता रखता है। वास्तव में, हाल ही में, जिस कार्य को मशीन के लिए भी करना असंभव माना जाता था, अब एआई एक वास्तविकता बन गया है। एआई ने कंप्यूटर को मानव मस्तिष्क की नकल करने के बहुत करीब ला दिया है, जिससे मनुष्य और मशीन के बीच का अंतर कम हो गया है। आज एआई ने शिक्षा, वित्त, रक्षा, कृषि और स्वास्थ्य सेवा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपना अनुप्रयोग पाया है। प्रमुख चिकित्सा अनुसंधान संस्थान घातक बीमारियों के प्रयोग, निदान, उपचार और निगरानी के खतरों को देखें। एआई के लिए तस्वीरें इन्हीं हैं:

उत्तरांग गुलाबी नहा है जितना दिखता है मानव गतिविधि के लगभग हर क्षेत्र में, दृढ़ा का व्यापक रूप से उपयोग गोपनीयता, डेटा सुरक्षा और पारदर्शिता से संबंधित

कुछ गंभीर चिंताओं को जन्म देता है। मनोवैज्ञानिक कल्याण और सामाजिक मुद्दे हमारे तत्काल ध्यान के हकदार हैं। कंपनियाँ कार्यस्थल पर विशिष्ट कार्यों को करने के लिए धीरे-धीरे मनुष्यों की जगह एआई संचालित रोबोट ले रही हैं। इससे कर्मचारियों में चिंता पैदा होती है और उनके मानसिक और भावनात्मक कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कार्यस्थल पर मनुष्यों के लिए कंप्यूटर की तकनीकी निपुणता भी एक बड़ी चुनौती है। हाल ही में एआई संचालित डीपफेक वीडियो और ऑनलाइन बॉट्स खतरनाक गति से फैल रहे हैं।

डीपफेक वीडियो और ऑनलाइन बॉट्स मनगढ़त आम सहमति बनाने और जनता की राय में हेरफेर करने में सक्षम हैं। फर्जी खबरें जंगल की आग की तरह फैलती हैं, जिससे शांति भंग होती है और सामाजिक अशांति पैदा होती है। छु का एक

चाहिए। दृढ़ संचालित बदलती प्रौद्योगिकी परिवृद्धश्य ने डेटा सुरक्षा, गोपनीयता, सम्मान, रोजगार, समानता, राजनीतिक अधिकार और गोपनीयता को खतरे में डाल दिया है। विशेषज्ञों और समाजशास्त्रियों ने स्वास्थ्य सेवा, कानून, विपणन, लेखा, शिक्षा, प्रबंधन, प्रौद्योगिकी और कार्यस्थलों जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एआई और मानव रोबोट पर अत्यधिक निर्भरता के हानिकारक प्रभावों के बारे में संदेह व्यक्त किया है। एआई की तकनीकी परिश्रम, अविश्वसनीय विश्लेषण शक्ति और दोहराए जाने वाले कार्यों को करने की क्षमता बड़ी छंटनी का कारण बन सकती है। नीतीजतन, यह अनुपातीन रूप से उच्च बेरोजगारी दर को जन्म देता है। कर्मचारियों और मजदूरों को भेदभाव और असमानताओं का सामना करना पड़ सकता है और उनकी पेशेवर और सामाजिक सुरक्षा दांव पर लग सकती है। एआई के दुरुप्योग को रोकने के लिए एक अच्छी तरह से परिभाषित और व्यापक तकनीकी-श्रम नीति समय की मांग है। एआई-संचालित परिवृद्धश्य में श्रमिकों को जीवित रहने में मदद करने वाले कुछ उपाय उचित प्रशिक्षण के माध्यम से कर्मचारी कौशल का निखारना और सॉफ्ट स्किल विकसित करना हैं।

आइए इस तथ्य को नज़रअंदाज़ न करें कि एआई पूरी तरह से मानवीय स्वभाव, समझ और रचनात्मकता से रहित है। मानव मस्तिष्क में अनंत रचनात्मक शक्ति और उच्च क्रम की सोच कौशल का आशीर्वाद है। ये सर्वोच्च गुण मनुष्य को एक ऊंचे स्तर पर ले जाते हैं और उन्हें मरीनों से भी ऊंचे स्थान पर रखते हैं। इसके विपरीत, एआई डेटा-चालित है और एक निर्धारित प्रक्षेपक्र का अनुसरण करता है, इस प्रकार, मानवीय भावनाओं, धारणा और किसी दिए गए वातावरण के अनुकूल कार्य करने की क्षमता को पकड़ने में विफल रहता है।

चूंकि एआई अपने प्रारंभिक चरण में है, इसलिए यह मान लेना जल्दबाजी होगी कि एआई जल्द ही मनुष्यों पर हावी हो जाएगा क्योंकि मनुष्य मौलिकता और नवाचार के मूल में बने हुए हैं।

आप की बात

भ्यानक गर्मी

राजधानी दिल्ली में बुधवार को गर्मी ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। दिल्ली के मुंगेशपुर इलाके में अधिकतम तापमान 52.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यह राष्ट्रीय राजधानी में अब तक दर्ज किया गया सर्वाधिक तापमान है। मुंगेशपुर में मंगलवार को अधिकतम 49.9 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया था। मौसम विभाग की वेबसाइट के अनुसार एक दिन बाद तापमान में और इजाफा हुआ और मौसम विज्ञान केंद्र ने शाम चार बजकर 14 मिनट पर अधिकतम तापमान 52.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया। मौसम विभाग के महानिदेशक डा. एम महापात्रा के अनुसार, मौसम विभाग दिल्ली के मुंगेशपुर स्वचालित मौसम स्टेशन में लगे तापमान सेंसर की जांच कर रहा है कि वह ठीक से काम कर रहा है या नहीं। मौसम विभाग की यह सतर्कता ठीक हो सकती है, पर अब समय आ गया है कि भारत के जिम्मेदार अधिकारी सर्वोच्च स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग की सबसे खतरनाक परिस्थितियों का आंकलन कर उसके अनुसार उपयुक्त रणनीति का रोडमैप तैयार करें। भारत सरकार को राज्य सरकारों ही नहीं स्थानीय निकायों से मिल कर जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे संभावित प्रभावों और भावी जोखिमों का लेखाजोखा रखना चाहिए।

پاکستانی ڈمکی

पाक सेना ने पहली बार ऐलान किया है कि उसके अणु बम हमले के लिए तैयार हैं और उसने पहले प्रयोग नहीं की रणनीति भी नहीं स्वीकार की है। इस प्रार उसने भारत को एक बार फिर धमकाया है। हाल ही में पूर्व पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने कहा था कि पाकिस्तान ने भारत के साथ किये समझौते को तोड़ा था जो उचित नहीं था। इसके बाद पाकिस्तानी सैन्य अधिकारी कह रहे हैं कि परमाणु बम के मामले में उनकी कोई नो फर्ट नीति नहीं है। इस धमकी को देखते हुए अब भारत को अपनी नो फर्ट नीति वापस लेने पर विचार करना चाहिए। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय माहौल में न केवल पाकिस्तान बल्कि चीन भी अपने परमाणु हथियारों की संख्या बढ़ा कर उनको तैनात कर रहा है। ऐसे में भारत को भी अपनी नाभिकीय अयुध व मिसाइल क्षमता का विस्तार कर उनको अद्यतन बनाने के प्रयास तेज करने चाहिए। भारत को अपना रक्षा खर्च भी बढ़ाना चाहिए जो चीन की तुलना में बहुत कम है। पाकिस्तान अब पूरी तरह चीन का मुहरा बन चुका है, इस प्रकार भारत को दो मोर्चों पर युद्ध की तैयारी करनी होगी। इस स्थिति में राहुल गांधी द्वारा सेना की अग्निवीर योजना की निरर्थक व अतार्किक आलोचना देश के लिए आत्मघाती सिद्ध हो सकती है। सभाष बडावन वाला, रत्नाम

जजों की छुट्टियां

भारत में न्यायाधीशों पर काम का बोझ बहुत अधिक है। ऐसे में उनकी छुट्टियों को लेकर उठाए गए सवालों का गहन विश्लेषण जरूरी है। भारतीय न्यायपालिका अधिकांश दिना सक्रिय रहती है, फिर भी लंबित मामलों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण न्यायाधीशों की कमी और बुनियादी ढांचे का अभाव है। कार्यादिवस के बाद भी जज अपना काम जारी रखते हैं, फलतँ पढ़ते हैं और फैसले लिखते हैं। स्पष्ट है कि न्यायाधीशों की छुट्टियां मानसिक और शारीरिक आराम के लिए आवश्यक होती हैं। लंबित मामलों की समस्या का समाधान जजों की छुट्टियां कम करने के बजाय न्यायपालिका को पर्याप्त संसाधन और बुनियादी ढांचे की जरूरत है। सरकार को न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि वर्तमान में प्रति 10 लाख जनसंख्या पर केवल 21 न्यायाधीश हैं, जबकि विधि आयोग ने 1987 में ही प्रति 10 लाख नागरिकों पर 50 जजों का सुझाव दिया था। इसके अलावा अदालतों में सुविधाओं का विस्तार और तकनीकी साधनों का उपयोग करके न्यायिक प्रक्रिया को तेज किया जा सकता है।

- अवनीश गुप्ता, आजमगढ़

[पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।](mailto:responsemail.hindipioneer@gmail.com)

